शिकस्त खा ले !

इल्म व हुनर क एज़्हार करने में उस्ताज़ से शिकस्त खा ले ।

ज़बान चलाने में औरत से शिकस्त खा ले ।

बुरी आवाज़ से बोलने में गधे से शिकस्त खा ले ।

खाने पीने में साथी से शिकस्त खा ले ।

माल खर्च करने में शेखी़ खोर से शिकस्त खा ले ।

लड़ाई लड़ने में बीवी से शिकस्त खा ले ।

खेल कूद में बच्चे से शिकस्त खा ले ।

अक़्ल व समझ में वालिदैन से शिकस्त खा ले ।

7415066579 jamdashahi.blogspot.com

बयान मत कर !

बे तहक़ीक़ बयान मत कर।

ख़ुद ग़र्ज़ के सामने अपनी मुसीबत बयान मत कर।

हासिद के सामने अपनी आमदनी। बयान मत कर।

किसी के सामने अपनी बे ह़याई के क़िस्से बयान मत कर।

कमज़ोर के सामने उस की कमज़ोरी बयान मत कर।

बीवी के सामने ग़ैर औ़रत की तअ़रीफ़ बयान मत कर।

अपनी ज़बान से अपनी ख़ूबियां बयान मत कर।

किसी के मुंह पर उस की तअ़रीफ़ बयान मत कर।

दूर भाग !

बुरी सोहबत से दूर भाग।
तोहमत की जगह से दूर भाग।
झगड़े और मोज़मा बाज़ी से दूर भाग।
नशा बाज़ों की मज्लिस से दूर भाग।

फहश नाविलों और रिसालों और किताबों से दूर भाग ।
अमीर से जब भूका हो जाए दूर भाग ।
कमीने से जब अमीर हो जाये। दूर भाग।

Jamdashahi.blogspot.com 7415066579

बहुत ही बुरा है !

अल्लाह तआ़ला के साथ शिर्क बहुत ही बुरा है।

मोमिनों के साथ अ़दावत बहुत ही बुरा है।

बुढ़ापे में ज़िना बहुत ही बुरा है।

ग़रीबी में तकब्बुर बहुत ही बुरा है।

वालिदैन के साथ जुल्म बहुत है

ज़ालिम की तअ़रीफ बहुत ही बुरा है ।

हमसाए की औ़रत से बद कारी बहुत ही बुरा है।

हाकिमे वक़्त का झूट बोलना बहुत ही बुरा है।

दीन में बिदअ़त सय्यह बहुत ही बुरा है।

Jamdashahi.blogspot.com 7415066579

बहुत ही बुरा है !

अल्लाह तआला के साथ शिर्क बहुत ही बुरा है।

मोमिनों के साथ अदावत बहुत ही बुरा है।

बुढ़ापे में ज़िना बहुत ही बुरा है।

ग़रीबी में तकब्बुर बहुत ही बुरा है।

वालिदैन के साथ जुल्म बहुत है

ज़ालिम की तअरीफ बहुत ही बुरा है ।

हमसाए की औरत से बद कारी बहुत ही बुरा है।

हाकिमे वक़्त का झूट बोलना बहुत ही बुरा है।

दीन में बिदअत सय्यह बहुत ही बुरा है।

Jamdashahi.blogspot.com 7415066579

Jamdashahi.blogspot.com 7415066579

बदकार और बुरे आदमी की सोहबत से सांप की मुहब्बत बेहतर है।

झगड़ा मोल लेने से ग़म का खा लेना बेहतर है ।

बे मौक़ा बोलने की आदत से गूंगा हो जाना बेहतर है।

ह़राम के माल की मालदारी से मुफ्लिसी बेहतर है।

छछोरे आदमी से मदद और हदिया से फाक़ा बेहतर है।

ख़ौफ व ज़िल्लत के ह़लवे से आज़ादी की खुश्क रोटी बेहतर है।

बे इ़ज्ज़ती की ज़िन्दगी से इ़ज्ज़त की मौत बेहतर है।

Jamdashahi.blogspot.com

मत ठुकरा ! 7415066579

मां बाप की मुहब्बत मत ठुकरा।

मिलती हुई रोज़ी मत ठुकरा ।

खाने पीने की चीज़ मत ठुकरा।

छोटी से छोटी नेअ़मत मत ठुकरा।

बहन की महब्बत मत ठुकरा।

अपने ख़ैर ख़्वाहों की बात मत ठुकरा।

मुम्किन नहीं !

जैसी सोहबत में बैठे वैसा न बने, मुम्किन नहीं।
हर काम में जल्दी करे और नुक़सान न उठाए, मुम्किन नहीं।
दुनया से दिल लगाए और पशेमान न हो, मुम्किन नहीं।
हिम्मत व इस्तेक़लाल को शआ़र बनाए
और मुराद को न पहोंचे मुम्किन नहीं।
ज़्यादा बातें करे और कोफ्त न उठाए ,
मुम्किन नहीं।
औरतों की सोहबत में बैठे, और रुस्वा न हो,मुम्कि

Jamdashahi.blogspot.com 7415066579

Jamdashahi.blogspot.com

मत ठुकरा ! 7415066579

मां बाप की मुहब्बत मत ठुकरा।

मिलती हुई रोज़ी मत ठुकरा ।

खाने पीने की चीज़ मत ठुकरा।

छोटी से छोटी नेअ़मत मत ठुकरा।

बहन की महब्बत मत ठुकरा।

अपने खैर ख़्वाहों की बात मत ठुकरा।

मत बढ़ा !

बुरे दोस्त मत बढ़ा।
बात मत बढ़ा ।
कर्ज़ मत बढ़ा।
ऐश व इशरत मत बढ़ा।
ज़्यादा लोगों से बे तकल्लुफी मत बढ़ा।
बद अअ़्माली का बोझ मत बढ़ा।
पड़ोसी से दुशमनी मत बढ़ा।
आमदनी से ज़्यादा खर्च मत बढ़ा।

Jamdashahi.blogspot.com
7415066579 khanjamdashahi@gmail.com

मत मार !
माँ का दिल मत मार ।
किसी का दिल मत मार ।
बच्चे के चेहरे और सर पर मत मार।
दूसरे के बच्चे को मत मार ।
पड़ोसी के पालतू जानवर को मत मार।
किसी को कमज़ोर समझ कर मत मार।
अपने से बड़े को मत मार।
ह़द से ज़्यादा बीवी को मत मार।
किसी मज़लूम को मत मार।
Jamdashahi.blogspot.com 7415066579
khanjamdashahi@gmail.com

बेहतरीन नेकी और शराफ़त है!
क़ाबू पाकर मुआफ़ कर देना बेहतरीन नेकी और शराफ़त है।
अहलो अयाल वाले मुफ़्लिस की खुफ़्या मदद करना बेहतरीन नेकी और शराफ़त है।
मआशी क़र्ज़ और हक़ को अदा करना बेहतरीन नेकी और शराफ़त है।
हक़ पर होते हुए झगड़ा मिटाने के लिए खामोश हो जाना बेहतरीन नेकी और शराफ़त है।
कमज़ोर और मज़लूम की हिमायत करना बेहतरीन नेकी और शराफ़त है।
जहां कोई न कह सके और ज़रूरत हो वहां हक़ बात कह देना बेहतरीन नेकी और शराफ़त है।
बुराई पाने के बावजूद रिश्तेदारों के साथ एहसान व सुलूक करते रहना बेहतरीन नेकी और शराफ़त है।
Jamdashahi.blogspot.com 7415066579
khanjamdashahi@gmail.com

मत कर !

बग़ैर तजरबा के किसी पर भरोसा मत कर।

बग़ैर मशवरा के कोई काम मत कर।

किसी पर नुक्ता चीनी मत कर।

रिशदारों से कतअ़ तअ़ल्लुक मत कर।

पीठ पीछे बुराई मत कर।।

खूब सोचे समझे बग़ैर औरत के कहने पर अ़मल मत कर।

हाजत मन्द रिस्तादार को ना उम्मीद मत कर।

इरशादातेनबवी व सुन्नते नववी से कनारा कशी मत कर।

हक़ बात से गुरेज़ मत कर।।

किसी पर ज़ुल्म मत कर।

ज़िना मत कर।

Jamdashahi.blogspot.com 7415066579

khanjamdashahi@gmail.com

शिकायत मत कर !

अपनी क़िस्मत पर शिकायत मत कर ।

औलाद के सामने अपने बड़ों की शिकायत मत कर।

कभी भूल कर भी मां बाप को उस्ताज़ की शिकायत मत कर।

ग़ैर के साम्ने अपने दोस्त की शिकायत मत कर।

बीवी के सामने उस के मैके वालों को शिकायत मत कर।

रुख़सत करने के बाद अपने मेहमान की शिकायत मत कर ।

ग़ैर के साम्ने अपने दोस्त की शिकायत मत कर।

Jamdashahi.blogspot.com 7415066579 khanjamdashahi@gmail.com

आती है !

फुजूल खर्ची से मुफ्लिसी आती है।

मेहनत व दियानत और किफायत शिआरी से दौलत आती है।

बे अदबी करने से बद नसीबी आती है।

यतीम,बेवा और वाकिफ कार का माल ना हक खाने से बरबादी आती है।

बुज़ुर्गों की सोहअत में बैठने से अक़्ल व अदब आती है।

ग़ीबत करने और सुन ने बीमारी आती है।

मुसीबत व तक्लीफ में सब्र करने से और शिकवा करने से राहत आती है।

Jamdashahi.blogspot.com 7415066579 khanjamdashahi@gmail.com

आज़माया जाता है!

बहादुर मुक़ाबले के वक़्त आज़माया जाता है।
मुस्तक़िल मिज़ाज मुसीबत के वक़्त आज़माया जाता है।
अमानत दार मुफ्लिसी के वक़्त आज़माया जाता है।
दोस्त ज़रुरत के वक़्त आज़माया जाता है।
बुर्द बार गुस्सा के वक़्त आज़माया जाता है।
शरीफ मआमिला टूटने के वक़्त आज़माया जाता है।
इमाम मुसीबत में हो तो उस वक़्त मुक़्तदी को आज़मा जाता है।

Jamdashahi.blogspot.com 7415066579 khanjamdashahi@gmail.com

नहीं चलती !

जाहिलों के सामने अक़्ल मन्द की दलील नहीं चलती ।
मालदारों के मजमअ़ में ग़रीब की बात नहीं चलती ।
ख़्यालात की दुनिया पर किसी की हुकूमत नहीं चलती।
ज़ालिम के सामने कोई मुहब्बत नहीं चलती ।
तक़्दीर के आगे कोई तदबीर नहीं चलती।
बद दियानत और झगड़ालू की दूकान नहीं चलती।
रब्बे किबरिया के आगे किसी की बादशाहत नहीं चलती।

Jamdashahi.blogspot.com 7415066579 khanjamdashahi@gmail.com

दोस्ती मत करना :

ग़र्ज़ मन्द लालची से दोस्ती मत करना।

बदकार और मक्कार से दोस्ती मत करना।

दोस्त के दुशमन और दुशमन के दोस्त से दोस्ती मत करना।

छिछोरे और शेखी खोरे से दोस्ती मत करना।

बे जाने बूझे और बख़ील से दोस्ती मत करना।

बे वकूफ़ और झूटी गवाही देने वाले से दोस्ती मत करना।

जिस शख़्स से मां बाप मना करें दोस्ती मत करना।

बे जा कलाम और ज़्यादा क़स्में खाने वाले से दोस्ती मत करना।

Jamdashahi.blogspot.com 7415066579 khanjamdashahi@gmail.com

मुन्तज़िर रहे!

ज़्यादा खाने वाला बीमारी का मुन्तज़िर रहे।

ओबाश यारों वाला बरबादी का मुन्तज़िर रहे।

खुस्र व सास से बुरा बरताव करने वाला अपने दामाद से मुन्तज़िर रहे।

जुल्म करने वाला अपनी हलाकत का मुन्तज़िर रहे।

पड़ोसी को तकलीफ़ पहोंचाने वाला खुदा के क़हर व अज़ाब का मुन्तज़िर रहे।

ज़्यादा और बे हूदा कलाम करने वाला मसायब व आलाम का मुन्तज़िर रहे।

चुगुल खोरी करने वाला ज़िल्लत व ख़्वारी का मुन्तज़िर रहे।।

Jamdashahi.blogspot.com 7415066579 khanjamdashahi@gmail.com

साथ रखो

दोस्ती रखो ....अहले इल्म के साथ ।

ग़रीब की बात सुनो...........हमदर्दी के साथ

खुदा से मांगो ....आजिज़ी के साथ

बच्चों की परवरिश करो.........रिज़्क़े हलाल के साथ

बड़ों से बात करो .... अदब व एह्तेराम के साथ

बच्चों से मिलो.............शफक़त के साथ

बात करो .... अक़ल के साथ

कामयाबी पाओ ....मेह्नत के साथ

ज़िन्दा रहो.......ईमान के साथ

Jamdashahi.blogspot.com khanjamashahi@gmail.com 7415066579

मुसलमानों का तआ़रुफ

मुसलमान का घर – जन्नत

मुसलमान का इन्तेज़ार – क़ब्र

मुसलमान का काम – अशाअ़ते दीन

मुसलमानों का दोस्त – अल्लाह, रसूल , मोमिन

मुसलमानों का दुशमन – शैतान, नफस

मुसलमानों का कैद खाना– दुनिया

मुसलामानों का दवा –आबे ज़म ज़म,सूरए फातेह़ा

मुसलमानों का मक़सद – अल्लाह तआ़ला की रज़ा

दोस्ती रखो ....अहले इल्म के साथ
ग़रीब की बात सुनो..........हमदर्दी के साथ
खुदा से मांगो ....आजिज़ी के साथ
बच्चों की परवरिश करो.........रिज़्क़े हलाल के साथ
बड़ों से बात करो .... अदब व एहतेराम के साथ
बच्चों से मिलो............शफक़त के साथ
बात करो .... अक़्ल के साथ
कामयाबी पाओ ....मेहनत के साथ
ज़िन्दा रहो.......ईमान के साथ

दस खसलतें अल्लाह तआ़ला को दस शख़्सों से ना पसन्द हैं।
बुख्ल मालदारों से, तकब्बुर फक़ीरों से
तमअ़ आ़लिमों से, बे शर्मी औ़रतों से
हुब्बे दुनिया बूढ़ों से, सुस्ती नौजवानों से,
ज़ुल्म बादशाहों से, ना मर्दी ग़ाज़ियों से ,
खुद पसन्दी ज़ाहिदों से रया कारी आ़बिदों से

Jamdashahi.blogspot.com
khanjamashahi@gmail.com 7415066579

आठ चीज़े कभी सैर नहीं होती (यअ़नी इन का पेट कभी नहीं भरता)

आंख देखने से, ज़मीन बारिश से
आ़लिम इल्म से, सायल सवाल से
दरया पानी से, मर्द औ़रत से
आग लकड़ियों से,
हरीस (लालची) माल जमा करने से

Jamdashahi.blogspot.com khanjamashahi@gmail.com 7415066579

ज़िन्दगी का मतलब !

ज़े: ज़िन्दा दिली से रहो

नून: से – नसीहतों पर अ़मल करो

दाल: से– दुशमनों को मुआ़फ करो

गाफ: से– गुमराही की तरफ न जाओ

ये : से– याद रखो अपने माज़ी को।

Jamdashahi.blogspot.com
khanjamashahi@gmail.com 7415066579

ज़िन्दगी क्या है!

फूल ने कहा – ज़िन्दगी खुशबू है

तक़्दीर ने कहा – ज़िन्दगी ठोकरों का नाम है

बरसात ने कहा– ज़िन्दगी बरसने का नाम है

तालिबे इल्म ने कहा – ज़िन्दगी कोशिश का नाम है।

अमीर ने कहा – ज़िन्दगी अ़ैश व इशरत का नाम है

ग़रीब ने कहा – ज़िन्दगी महरूमी का नाम है

आशिक़ ने कहा – ज़िन्दगी महब्बत का नाम है

गुल ने कहा – ज़िन्दगी हुस्न है

समन्दर ने कहा – ज़िन्दगी जोश है और जज़्बा है

चांद ने कहा – ज़िन्दगी आज़ादी है

गुलशन ने कहा– ज़िन्दगी खूबसूरती है प्यार है

खिलाड़ी ने कहा – ज़िन्दगी हार और जीत का नाम है

मगर दर ह़क़ीक़त ज़िन्दगी का नाम है बन्दगी करो और अल्लाह की बारगाह में सरखुरुई हासिल करो।

Jamdashahi.blogspot.com khanjamashahi@gmail.com 7415066579

चेचक के लिए!

Jamdashahi.blogspot.com
khanjamdashahi@gmail.com
7415066579

सात बार उस के कान में
बोलना है।चेचक के लिए मुफीद है।
(ऐ बुढ़िया देहिय्या के जंगल हज़रत यहया
मुनेरी से क्या वअ़दा की थी)

1: दिल हर फिकर व ख़्याल से पाक हो

2: कलाम के माना को समझना

3: अल्लाह तआ़ला की अ़ज़मत और जलाल को तसव्वुर करे।

4: अल्लाह तआ़ला को बड़ा समझते हुए दिल में उस का खौफ हो

5: नमाज़ की क़बूलियत और सवाब की उम्मीद रखो।

6: अपनी कोहातियों और गुनाहों से शमिन्दा रहे।

कामिल नमाज़ के लिए छः रूहानी काम।

नमाज़

1 दिल की हाज़री

دل ہر فکر و خیال سے پاک ہو

2 नमाज़ को समझना

کلام کے معنی کو سمجھے

3 तअ़ज़ीम

اللہ تعالیٰ کی عظمت اور جلال کا تصور کرے

4 खौफ

اللہ تعالیٰ کو بڑا سمجھتے ہوئے دل میں اس کا خوف ہو۔

5 उमीद

نماز کی قبولیت اور ثواب کی اُمید رکھے

6 नदामत

اپنی کوتاہیوں اور گناہوں سے شرمندہ رہے۔

روح نماز

रुहे नमाज़

मुझे नफरत है
सौम व सलात की पाबन्दी न करने वाले से।
दूसरों से ह़सद करने वाले से ।
मां बाप की ना फरमानी करने वाले से
वक़्त की क़द्र न करने वाले से।

jamdashahi.blogspot.com
khanjamdashahi@gmail.com
7415066579

अक़्लमन्द शख्स वह है जो :—

अपनी ख्वाहिशात को कम कर दे।

जो इन्तेकाम न ले बल्कि अफ्व से काम ले ।

जो ज़्यादा सुने और कम बोले ।

जो बदी के बदले में नेकी करे ।

जो अपने एहसानात भूल जाये और दूसरों की नीकियां याद रखे।

जो झूठ बोलने से परहेज़ करे ।

जो ग़रीबों की मदद करे।

जो ज़िन्दगी के हर तजरबे से फाइदा हासिल करे।

जो पांच वक़्त नमाज़ क़ायम करे और नमाज़ में

जो अल्लाह तआला से अ़हद करता है उसे पूरा करे।

Jamdashahi.blogspot.com khanjamdashahi@gmail.com 7415066579

अक़्लमन्द शख़्स वह है जो :—

अपनी ख़्वाहिशात को कम कर दे।

जो इन्तेक़ाम न ले बल्कि अफ़्व से काम ले ।

जो ज़्यादा सुने और कम बोले ।

जो बदी के बदले में नेकी करे ।

जो अपने एह्सानात भूल जाये और दूसरों की नीकियां याद रखे।

जो झूठ बोलने से परहेज़ करे ।

जो ग़रीबों की मदद करे।

जो ज़िन्दगी के हर तजरबे से फ़ाइदा हासिल करे।

जो पांच वक़्त नमाज़ क़ायम करे और नमाज़ में

जो अल्लाह तआ़ला से अ़हद करता है उसे पूरा करे।

Jamdashahi.blogspot.com khanjamdashahi@gmail.com 7415066579

سلسلہ اذکار مسنونہ
گرافک 55
دشمن کے خلاف بد دعا
اَللّٰهُمَّ مُنْزِلَ الْكِتَابِ ، سَرِيْعَ الْحِسَابِ ، اِهْزِمِ الْاَحْزَابَ، اَللّٰهُمَّ اهْزِمْهُمْ وَزَلْزِلْهُمْ
اے اللہ کتاب کو نازل کرنے والے ، جلد حساب لینے والے ، لشکروں کو شکست دے دے ، اے اللہ انہیں شکست دے اور انہیں ہلا کر رکھ دے۔
صحیح مسلم (1742)
दुशमन के खिलाफ़ बद दुआ़ :
अल्लाहुम्म मुन्ज़िलल किताब, सरीअ़ल हिसाब,
इहज़िमिलअह़ज़ाब,
अल्लाहुम्महज़िमहुम व ज़लज़िलहुम
jamdashahi.blogspot.com 7415066579

कामों में मुक़र्रर बुजुर्ग

1: हज़रत अ़ली – इल्म व कुव्वत के वास्ते

2: हज़रत कुतबुद्दीन बख़्तियार काकी रहः
जिस्मानी तक्लीफ से निजात के लिए

3: हज़रत मूसा क़लन्दर (बू अ़ली शाह) रहः
दौलत मन्दी के वास्ते।

4: हज़रत बाबा ताजुद्दीन रहः
हाकिमों की ताक़त से तंग होने पर निजात के लिए।

5: हज़रत सुग़रा रदियल्लाहु अ़न्हा
शादी के लिए

6: तमाम शोहदा जो दीन के रास्ते में शहीद हुए हों
औलाद के लिए

7: हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रदिः
रिज़्क़ के लिए

8: हज़रत शैख़ बहाउद्दीन सरयाबी रहः
इज़्ज़त और मर्तबे के लिए ।

9: हज़रत सुलेमान अ़लैहिस्सलाम
सितारों की नहूसत से निजात के लिए।

10: हज़रत ग़ौसो आज़म
(असर मग़रिब के बीच 101 नवें नाम को पढ़ें)
दूसरों की ज़िन्दगी में ख़ुशी का ज़रियअ़ बनने के
वास्ते।

11: नामे अहमद (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम)
यह तमाम आख़िरत की मुराद के वास्ते है, 911 बार रोज़ पढ़ें

12: नामे मुहम्मद (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम)
यह तमाम दुनयावी मुराद के वास्ते है 711 बार रोज़ पढ़ें।

7415066579 khanjamdashahi@gmail.com
Jamdashahi.blogspot.com

कामों में मुक़र्रर बुजुर्ग

1: हज़रत अ़ली – इल्म व कुव्वत के वास्ते

2: हज़रत कुतबुद्दीन बख़्तियार काकी रहः
जिस्मानी तक्लीफ से निजात के लिए

3: हज़रत मूसा क़लन्दर (बू अ़ली शाह) रहः
दौलत मन्दी के वास्ते।

4: हज़रत बाबा ताजुद्दीन रहः
हाकिमों की ताक़त से तंग होने पर निजात के लिए।

5: हज़रत सुग़रा रदियल्लाहु अ़न्हा
शादी के लिए

6: तमाम शोहदा जो दीन के रास्ते में शहीद हुए हों
औलाद के लिए

7: हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रदिः
रिज़्क के लिए

8: हज़रत शैख़ बहाउद्दीन सरयाबी रहः
इज़्ज़त और मर्तबे के लिए ।

कामों में मुक़र्रर बुजुर्ग

9: हज़रत सुलेमान अ़लैहिस्सलाम
सितारों की नहूसत से निजात के लिए।

10: हज़रत ग़ौसो आज़म
(असर मग़्रिब के बीच 101 नवें नाम को पढ़ें)
दूसरों की ज़िन्दगी में खुशी का ज़रियअ़ बनने के वास्ते।

11: नामे अहमद (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम)
यह तमाम आखिरत की मुराद के वास्ते है, 911 बार रोज़ पढ़ें।

12: नामे मुहम्मद (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम)
यह तमाम दुनयावी मुराद के वास्ते है 711 बार रोज़ पढ़ें।

7415066579 khanjamdashahi@gmail.com
Jamdashahi.blogspot.com

डिलीवरी जल्द हो।

" या यह्या शैख़ मनेरी रह़मतुल्लाह अ़लैह "

यह नाम कागज़ पर लिख कर इस कागज़ को हमल वाली के पेट पर चिपका देने से फौरन (एक घन्टे में) डिलीवरी हो जाती है।

7415066579 khanjamdashahi@gmail.com
Jamdashahi.blogspot.com

तीन अम्लियात – मुजर्रबाते शहनशाह

(1) आयतल कुर्सी कुल पीरों की सवारी, आह मारे पुकारी, तांबे का कोट,लोहे की कड़ी, सुलेमान पैग़म्बर की दुआ।

(2) काला खैरा काला विस, जिस को काटे सांप,उस का उतरे वीस,न उतरे तो शैख़ आए,उस की मुंगरी,अन नरविस नरविस नरविस

(3)यहां था तो कहां गया,गाए के दम में गाए को लगा पान,उतर उतर बिच्छू , तेरे सात खोरी की क़सम ।

शबे मेअ़राज,शबे बरात,शबे क़द्र , तीनों रातों में 313 बार मरतबा पढ़ना है अव्वल व आखिर ग्यारा ग्यारा बार दरुद शरीफ पढ़ना है एक साल की ज़कात अदा हो जाएगी,

(1) पहला अ़मल हर बीमारी,हर परेशानी,आसेब और करतब सभी के लिए है। सिर्फ पढ़ कर फूंकना है और कुछ उपर लगा हुआ है। तो 11 बार पढ़ कर अपने हाथ पर दम करें और उस को चाटा मारें।

(2)सांप के ज़हर को उतारने के लिए है,नीम की बारह सीकें ले लो सर से पांव तक पढ़ते जाओ और झाड़ते जाओ । इन्शाअल्लाह ज़हर उतर जाएगा ।

(3)बिच्छू का ज़हर उतारने के लिए। जहां बिच्छू ने डंक मारा है । वहां पर नमक ले कर लगा कर झाडो और पढ़ते जाओ।

हज़रत अल्लामा मौलाना मुफ्ती मुहम्मद अन्सार ख़ान क़ादरी रज़वी (छिन्दवाड़ा)

मध्य प्रदेश का एक अज़ीमुश्शान फतवा मुक़द्दस

सलाम मस्नून .... सलाम अर्ज़ है कि

(1)क्या फरमाते उलमाए दीन शरए मतीन इस मसअले में कि ज़ैद मीरा अली दातार रहमतुल्लाह अलैह की बारगाह से कुछ भी ईंट या चिरागया कोई और चीज़ ले कर आया है। और उस की मज़ार बनाया और उस मज़ार पर लोग हाज़री देते हैं फातहा पढ़ते हैं, ईसाल करते हैं,दुआ मांगते हैं,उन्हें मना किया जाये तो कहते हैं। कि अगर हक़ नहीं तो फैज़ क्यों मिलता है तो उस का जवाब क्या है,और जो हाज़री देते हैं तो हाज़री देना कैसा है,और जिस ने ऐसा अमल किया यअनी मज़ार बनाया तो उस के बारे में शरीअत का क्या हुक्म है ? तसल्ली बख़्श जवाब दें।

(1) अलजवाब बिऔनिल मलिकिल मुअतिल वहहवब अल्लाहुम्मा हिदासतिल हक्क वस्सवाबः

जिस क़ब्र में कोई वली दफन है वही मज़ार है। किसी बुज़ुरुग के यहां से कोई भी चीज़ ला कर ज़मीन में गाड़ दें और उस का नाम मज़ार रख दें यह नाजाईज़ है और फर्ज़ी क़ब्र पर हाज़री, नज़्र व नियाज़,और वहां दुआ मांगना ना जाईज़ है और मज़हबे अहले सुन्नत को बदनाम करना है उस को मिटा देना चाहिए और बनाने वाले और वहां जाने वालों पर तौबा लाज़िम है और यह वसवसा शैतानी है कि अगर हक़ नहीं तो फैज़ क्यों मिलता है यह बात तो बुत का पुजारी भी कह सकता है तो क्या उस की बात मान ली जायेगी,जिस की हाजत पूरी ही होने वाली थी हो गई वहां नहीं जाता तो भी हो जाती, अल्लाह तआला इरशाद फरमाता है ज़य्य न लहुमुश्शैता नु अअमालहुम शैतान बुरे कामों को लोगों की नज़र में अच्छा कर के पेश करता है। वलियल्लाह को घर में याद करो उन के वसीले से दुआ करो,उन से मदद लो हाजत पूरी होगी। वल्लाह तआला अअलम बिस्सवाब ।

(2)साई मुशरिक था, मन्दिर में जाकर मूरती के पास हाज़िर होना वहां दुआ मांगना,फातहा पढ़ना,मूरती की बिला शक व शुब्हा तअज़ीम करना खुला हुआ कुफ्र है। मुशरिक की मग्फिरत की दुआ करना और वह भी मरने के बाद कुफ्र है,(लाहौ ल वला कुव्व त इल्ला बिल्लाहिल अलिय्यिल अज़ीम) कोई ईमान वाला मन्दिर में ही नहीं जा सकता उन सब पर तौबा और फिर से मुसलमान होना फर्ज़ है , और जो बीवी वाला हो उस पर नए मेहर के साथ दोबारा उसी बीवी के साथ निकाह करना भी फर्ज़ है वरना हमबिस्तरी खालिस ज़िना कारी होगी और औलाद वल्दुज़्ज़िना (हरामी) अल्लाह तआला हिदायत दे (आमीन)

(3)क्या फरमाते हैं उलमाए दीन शरए मतीन इस मसअले में कि ज़ैद एक सुन्नी मस्जिद में इमाम है, ज़ैद को तअज़ियादारों से या फर्ज़ी कब्रों पर जाने वालों से कैसे तअल्लुकात रखने चाहिए ?

(3) उन से तअल्लुक रखने में उन के हिदायत की उम्मीद हो तो तअल्लुक रखना जाईज़ है वरना उन से दूरी बेहतर है।

(4) क्या फरमाते हैं उलमाए दीन शरए मतीन इस मसअले में कि चन्द लोग मुसलमान हुजूर ताजुल औलिया हज़रत बाबा ताजुद्दीन बाबा रहमतुल्लाह अलैह का जनम दिन जुलूस की शकल में और हज़रत फोटू जुलूस में उठाए हुए चलना और केक काटना,इस तरह किसी बुज़ुरुग का यौमे पैदाईश मनाना कैसा है ?

(4) यौमे विलादत मनाना जाइज़ है,फोटू हराम है,केक काटना अंग्रेज़ों का तरीका है,उस से बचें, किसी भी पाक चीज़ पर फातहा ईसाले सवाब जाइज़ है।

(5) क्या फरमाते हैं उलमाए दीन शरए मतीन इस मसअले में कि सन्दल जो बुज़ुरुगों का निकालते हैं,ढोल बाजे के साथ उस के बारे में शरीअत का क्या हुक्म है ?

(5) ढोल बाजे नाजाइज़ हैं।

(6) क्या फरमाते हैं उलमाए दीन शरए मतीन इस मसअले में ज़ैद एक सुन्नी शख़्स है,उस की साली ईसाई के साथ अज़्दवाजी ज़िन्दगी गुज़ार रही है,ज़ैद ईसाई के घर जाता है खाता पीता है ऐसे के बारे में शरीअत का क्या हुक्म है ?

(6) ब शर्ते सिहत सवाल ईसाई अपने मज़हब पर क़ायम है और ज़ैद की साली उस की दाश्ता (रखेल) है,बीवी नहीं है खालिस ज़िनाकारी हो रही है,ज़ैद के ईसाई के साथ तअ़ल्लुक़ात ज़िनाकारी पर रज़ा मन्दी की खुली दलील है,वह भी इस गुनाह में शरीक,ज़िना का दलाल व दय्यूस है ज़ैद और उस की साली पर फर्ज़ है कि ईसाई से हर तरह़ का तअ़ल्लुक़ ख़तम करे और एलानिया तौबा करे ,वरना मुसलमानों पर लाज़िम है,कि उन से हर त़रह का तअ़ल्लुक़ ख़तम कर दें। इरशादे खुदा वन्दी है फला तक़उद बअ़दज़्ज़िकरा मअ़ल क़ौमज़्ज़ालिमीन,

वल्लाहु तआ़ला अअ़लमु बिस्सवाब